Ameere Ahle Sunnat Se Jannat Ke Baare Mein Suwal Jawab (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 248
Weekly Booklet : 248

अमीरे अहले सुन्नत से

जन्नत

के बारे में सुवाल जवाब

सफ़हात 24

क्या ख़्वाब में जन्नत देख सकते हैं ? 04

क्या जिन्नात भी जन्नत में जाएंगे ? 09

दुन्या की जन्नती औरतें अफ़्ज़ल हैं या हूरें ? 14

जन्नती दाने वाला दरख़्त 21

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دامت برکاتہم العالیہ के मल्फ़ूज़ात का तहरीरी गुलदस्ता

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **अमीरे अहले सुन्नत से जन्नत के बारे में सुवाल जवाब**

सिने त़बाअ़त : **1443** हि., **2022** ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है ।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**अमीरे अहले सुन्नत से जन्नत के बारे में सुवाल जवाब**" मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअए मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की तबाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

येह रिसाला अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से किये गए सुवालात और उन के जवाबात पर मुश्तमिल है।

अमीरे अहले सुन्नत से जन्नत के बारे में सुवाल जवाब

दुआए जा नशीने अमीरे अहले सुन्नत : या रब्बल मुस्तफ़ा ! जो कोई 22 सफ़हात का रिसाला : **"अमीरे अहले सुन्नत से जन्नत के बारे में सुवाल जवाब"** पढ़ या सुन ले उसे जन्नत में ले जाने वाले नेक काम करने और गुनाहों से बचने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा कर बिला हिसाब मग़्फ़िरत से नवाज़ दे और जन्नतुल फ़िरदौस में अपने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस अ़ता फ़रमा। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ والہٖ وسلم

फ़रमाने मौला अ़ली मुश्किल कुशा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه

अल्लाह पाक ने जन्नत में एक दरख़्त पैदा फ़रमाया है जिस का फल सेब से बड़ा, अनार से छोटा, मख्खन से नर्म, शह्द से भी मीठा और मुश्क से ज़ियादा ख़ुश्बूदार है। उस दरख़्त की शाख़ें तर मोतियों की, तने सोने के और पत्ते ज़बर जद (या'नी क़ीमती पथ्थर) के हैं। لَا يَاْكُلُ مِنْهَا اِلَّا مَنْ اَكْثَرَ مِنَ الصَّلَاةِ عَلٰى مُحَمَّدٍ (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) उस दरख़्त का फल सिर्फ़ वोही खा सकेगा जो नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ेगा।

(الحاوی للفتاوی، 2/48)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

सुवाल : जन्नत किसे कहते हैं ? वज़ाहत फ़रमा दीजिये ।

(सोशल मीडिया के ज़रीए सुवाल)

जवाब : जन्नत के लफ़्ज़ी मा'ना हैं : बाग़ । हमारे अ़क़ीदे में जो "जन्नत" है वोह **अल्लाह** पाक की ने'मतों का बहुत बड़ा मक़ाम है । जिस में बहुत सी ऐसी ने'मतें हैं जो न किसी आंख ने देखी और न किसी कान ने उन के मुतअ़ल्लिक़ सुना । (بخاری، 2/391، حدیث:3244) ❀ जन्नत सिर्फ़ उन्हीं इन्सानों को नसीब होगी जो दुन्या से ईमान के साथ रुख़्सत होंगे । ❀ जिन्नात में भी अगर्चे मुसल्मान हैं लेकिन जन्नत बतौ़रे इन्आ़म सिर्फ़ ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की औलाद के लिये है । ❀ जन्नत में दाख़िल होने वाला फिर कभी भी उस से निकाला नहीं जाएगा ।[1]

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 6/15)

सुवाल : जन्नत के बारे में क्या अ़क़ीदा होना चाहिये ? नीज़ जन्नत का इन्कार करना कैसा ?

जवाब : जन्नत पर ईमान लाना फ़र्ज़ है अगर कोई जन्नत का इन्कार करेगा तो वोह काफ़िर हो जाएगा । हम बे देखे ग़ैब पर ईमान लाने वाले हैं क़ुरआने पाक में है :

يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ (پ1، البقرة:3) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** "बे देखे ईमान लाएं ।"

जन्नत भी एक ग़ैब है और **अल्लाह** पाक तो ग़ैबुल ग़ैब है हम उस पर ईमान लाते हैं । (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/149)

1... पारह 14 सूरतुल हिज्र की आयत नम्बर 48 में **अल्लाह** पाक ने इर्शाद फ़रमाया : لَا يَمَسُّهُمْ فِيْهَا نَصَبٌ وَّمَا هُمْ مِّنْهَا بِمُخْرَجِيْنَ ﴿۴۸﴾ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** न उन्हें उस में कुछ तक्लीफ़ पहुंचे न वोह उस में से निकाले जाएं ।

याद रहे कि जन्नत पर ईमान लाना ज़रूरिय्याते दीन में से है। अगर कोई कहे कि "जन्नत कुछ नहीं, येह ख़ाम ख़याली की बातें हैं" तो वोह काफ़िर हो जाएगा और अगर उस ने मौत से पहले तौबा न की तो हमेशा दोज़ख़ में रहेगा। नमाज़, रोज़ा और दीगर नेक आ'माल उसे कुछ काम न आएंगे। **अल्लाह** पाक अपने महबूबे करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े हम गुनाहगारों को बिला हिसाब जन्नत में दाख़िला नसीब फ़रमाए। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 6/15)

सुवाल : क्या जन्नत आस्मानों पर है ? (मुहम्मद हामिद अत्तारी, इस्तम्बूल)

जवाब : जन्नत सातों आस्मानों से ऊपर और जहन्नम सातों ज़मीनों के नीचे है। (شرح العقائد النسفیہ مع حاشیہ جمع الفرائد بانارۃ شرح العقائد، ص246) जन्नत बहुत ऊंची और जहन्नम बहुत नीची है।

अल्लाह करीम हमें नीचे उतरने से बचाए और ऊपर की परवाज़ नसीब फ़रमाए कि हम जन्नत में जा कर प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़दमों से लिपट जाएं। जन्नत में प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोसी बनने का शरफ़ मिल गया तो اِنْ شَآءَاللہ सब कुछ मिल जाएगा।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 6/456)

सुवाल : जन्नत और उस की ने'मतें कैसी होंगी ?[1]

जवाब : अहादीसे मुबारका में हमें समझाने के लिये जन्नत की मुख़्तलिफ़ मिसालें बयान की गई हैं। लेकिन हक़ीक़त तो येह है कि जब जन्नत देखेंगे

1... येह सुवाल शो'बा मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत की तरफ़ से क़ाइम किया गया है जब कि जवाब अमीरे अहले सुन्नत का अता फ़रमूदा ही है।

तो ही पता चलेगा क्यूं कि जन्नत की ने'मतों के बारे में येह भी मन्क़ूल है कि न किसी आंख ने देखा, न किसी कान ने सुना और न किसी दिल पर उन का ख़याल गुज़रा ।[1] (مسلم، ص1126، حدیث:7132)

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त : 248, स. 14)

सुवाल : जिस त़रह़ दुन्या की ज़िन्दगी में 12 महीने पाए जाते हैं तो क्या आख़िरत या'नी जन्नत की ज़िन्दगी में भी येह महीने पाए जाएंगे ?

(एक्टर, अह़सन ख़ान)

जवाब : आख़िरत में दुन्या जैसा निज़ाम नहीं है । दुन्या में तो गर्मियां, सर्दियां, महीने, हफ़्ते, दिन और रात मौजूद हैं, (लेकिन) वहां येह नहीं होंगे । जन्नत में हर वक़्त मौसिमे बहार होगा, दुन्या में जिस त़रह़ सुब्हे सादिक़ के वक़्त समां होता है वैसा समां जन्नत में होगा । (تفسیر قرطبی، پ29، الدھر، تحت الآیۃ:13، 10/100) वहां मख्खी, मच्छर, अंधेरा, सदमा और बदबू वग़ैरा जैसी कोई चीज़ नहीं होगी । वहां तो सिर्फ़ ख़ुशियां ही ख़ुशियां होंगी । जन्नती को जिस चीज़ की ख़्वाहिश होगी वोह उसे मिल जाएगी । जन्नत में सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार होगा । इतना ही नहीं जन्नत में जन्नती शख़्स को जो सब से बड़ी ने'मत मिलेगी वोह **अल्लाह** पाक का दीदार होगा । (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त : 234, स. 1)

सुवाल : क्या कोई इन्सान ख़्वाब में जन्नत देख सकता है ?

जवाब : जी हां ! बिल्कुल देख सकता है, इस में क्या ह़रज है ? अलबत्ता

1... सदरुश्शरीअ़ह मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जो कोई मिसाल इस (जन्नत) की ता'रीफ़ में दी जाए समझाने के लिये है, वरना दुन्या की आ'ला से आ'ला शै को जन्नत की किसी चीज़ के साथ कुछ मुनासबत नहीं ।

(बहारे शरीअ़त, 1/152, ह़िस्सा : 1)

येह तै करना मुश्किल है कि देखने वाले ने जो देखा है वोह जन्नत ही है ? मुम्किन है देखने वाले ने कोई अच्छा और ख़ुशनुमा बाग़ देखा हो और दिल में येह ख़याल पैदा हो गया हो कि मैं इस वक़्त जन्नत में हूं। हक़ीक़त में हम जन्नत उसी वक़्त देखेंगे जब आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पीछे पीछे اِنْ شَآءَاللّٰه जन्नत में दाख़िल होंगे, क्यूं कि हम **रसूलुल्लाह** के जन्नत **रसूलुल्लाह** की।

बहर हाल बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم के इस तरह के वाक़िआत हैं जिन में उन्हों ने जन्नती हूरों वग़ैरा को मुलाहज़ा फ़रमाया है। यूंही जन्नत में जाने के ख़्वाब कुतुब में लिखे हुए हैं लेकिन ख़्वाब हमारे लिये दलील नहीं। हक़ीक़त में जिस हस्ती ने जन्नत और हूरों को देखा है वोह हमारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा, शबे अस्रा के दूल्हा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं कि आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मे'राज की रात जन्नत की सैर फ़रमाई है। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इलावा किसी ने ख़्वाब वग़ैरा में कुछ देखा तो उस के बारे में यक़ीनी तौर पर नहीं कहा जा सकता कि उस ने बि ऐनिही जन्नत ही देखी है। यहां तो अक़्ल भी जन्नत का अन्दाज़ा नहीं लगा सकती कि जन्नत क्या चीज़ है ? और वोह कितना आ'ला मक़ाम है ? क्यूं कि हमारी अक़्लें नाक़िस हैं और **अल्लाह** पाक के हबीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अक़्ल मुबारक कामिल थी, कामिल है और कामिल रहेगी।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/148)

सुवाल : हज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام के ज़माने में "शद्दाद" ने जो जन्नत बनाई थी, उस का वाक़िआ बयान फ़रमा दीजिये।

जवाब : क़ौमे आद का मूरिसे आ'ला (या'नी सब से बड़ा वोह पहला

शख़्स जिस का विरसा उस की औलाद को मिले) आ़द बिन औ़स बिन इरम बिन नूह़ है। इस आ़द के बेटों में "शद्दाद" भी है, जो बड़ी शानो शौकत का बादशाह हुवा है, उस ने अपने वक़्त में तमाम बादशाहों को अपने झन्डे के नीचे जम्अ़ कर के सब को अपना मुत़ीओ़ फ़रमां बरदार बना लिया था। उस ने पैग़म्बरों की ज़बान से जन्नत का ज़िक्र सुन कर बग़ावत की निय्यत से दुन्या में जन्नत बनानी चाही, इस इरादे से उस ने एक बहुत बड़ा शह्र बनाया, जिस के मह़ल सोने चांदी की ईंटों से ता'मीर किये गए और ज़बर जद और याक़ूत के क़ीमती पथ्थरों के सुतून उन की इमारतों में नस्ब या'नी फ़िट किये गए। मकानों में ऐसे फ़र्श बनाए गए कि संगरेज़ों या'नी पथ्थर के कंकरों की जगह क़ीमती मोती बिछाए गए, हर मह़ल के गिर्द जवाहिरात से पुर नहरें जारी की गईं, क़िस्म क़िस्म के दरख़्त साए के लिये लगाए गए, अल ग़रज़ उस बाग़ी व सरकश ने अपने ख़याल से जन्नत की तमाम चीज़ें और हर क़िस्म की ऐ़शो इ़शरत के सामान उस शह्र में जम्अ़ कर दिये। जब शह्र मुकम्मल हुवा तो "शद्दाद बादशाह" अपने आ'याने सल्त़नत या'नी वुज़रा और दरबारी लोगों के साथ अपनी बनाई हुई जन्नत की त़रफ़ रवाना हुवा, जब एक मन्ज़िल का फ़ासिला बाक़ी रह गया तो आस्मान से एक ख़ौफ़नाक आवाज़ आई जिस से **अल्लाह** पाक ने "शद्दाद" और उस के तमाम साथियों को हलाक कर दिया और वोह मर गए और वोह अपनी बनवाई हुई जन्नत को देख भी न सका। (ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, पारह : 30, अल फ़ज्र, तह़्तल आयह : 8, स. 1102 माख़ूज़न) **अल्लाह ! अल्लाह !** कैसी इ़ब्रत है ! (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 5/313)

सुवाल : जब हम سُبْحٰنَ اللّٰه बोलते हैं तो जन्नत में कौन सा दरख़्त लगता है ?

जवाब : ह़दीसे पाक में है कि जन्नत में खजूर का दरख़्त लगाया जाता है। (ابنِ ماجہ، 4/252، حدیث:3807) वोह कैसी खजूरें होंगी ? दरख़्त कैसा होगा ? येह तो जन्नत में जा कर ही देखेंगे। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 6/294)

सुवाल : दुआ़ में जन्नत का सुवाल करने और जहन्नम से पनाह मांगने की क्या अहम्मिय्यत है ?

जवाब : **अल्लाह** पाक से जन्नत का सुवाल करना और जहन्नम से पनाह मांगना सुन्नते मुबारका है जैसा कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मन्क़ूल त़वील दुआ़ में येह अल्फ़ाज़ भी हैं : ''وَاَسْئَلُكَ الْجَنَّةَ وَمَا قَرَّبَ اِلَيْهَا مِنْ قَوْلٍ وَّعَمَلٍ وَّ اَعُوْذُبِكَ مِنَ النَّارِ وَمَا قَرَّبَ اِلَيْهَا مِنْ قَوْلٍ وَّعَمَلٍ या'नी ऐ **अल्लाह** ! मैं तुझ से जन्नत और जन्नत से क़रीब करने वाले आ'माल का सुवाल करता हूं और जहन्नम और उस से क़रीब करने वाले आ'माल से तेरी पनाह मांगता हूं।'' लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि रोज़ाना कम अज़ कम तीन तीन बार **अल्लाह** पाक से जन्नत में दाख़िले और दोज़ख़ से बचने की दुआ़ मांग लिया करें। **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जो शख़्स **अल्लाह** पाक से तीन मरतबा जन्नत का सुवाल करता है तो जन्नत कहती है : ''ऐ **अल्लाह** पाक ! इसे जन्नत में दाख़िल फ़रमा।'' और जो तीन मरतबा जहन्नम से पनाह मांगता है तो जहन्नम कहती है : ''ऐ **अल्लाह** पाक ! इसे जहन्नम से पनाह अ़ता फ़रमा।''

(ترمذی، 4/257، حدیث:2581)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! याद रहे कि जन्नत की त़लब और जहन्नम से पनाह मांगने की दुआ अ़रबी में ही करना ज़रूरी नहीं, अपनी मादरी ज़बान में भी येह दुआ रोज़ाना तीन तीन बार कर लेंगे तो اِنْ شَآءَ اللّٰہ الْکَرِیْم बयान कर्दा फ़ज़ीलत ह़ासिल हो जाएगी ।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/132)

सुवाल : क्या हर मुसल्मान जन्नत में जाएगा ?

(साइल : मुह़म्मद अह़मद, सिडनी, ऑस्ट्रेलिया)

जवाब : जी हां ! जिस का ईमान पर ख़ातिमा हुवा वोह यक़ीनन जन्नत में जाएगा, अलबत्ता कुछ गुनाहगारों को **अल्लाह** पाक अपनी रह़मत से मुआ़फ़ फ़रमा देगा और किसी को नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त से, किसी को बुज़ुर्गों की शफ़ाअ़त से बख़्श देगा और बा'ज़ गुनाहगार अपने गुनाहों की वज्ह से दोज़ख़ में जाएंगे और अ़ज़ाब के बा'द जन्नत में दाख़िल किये जाएंगे ।

ख़बरदार ! येह हरगिज़ न कहा जाए कि "जब जन्नत में जाना ही है तो कोई भी गुनाह कर लो मस्अला नहीं, थोड़ा बहुत अ़ज़ाब सह लेंगे !" याद रखिये ! ऐसा कहने वाला शख़्स हमेशा जहन्नम में रहेगा क्यूं कि उस ने **अल्लाह** पाक के अ़ज़ाब को हलका समझ कर उस की तौहीन की है, बेशक **अल्लाह** पाक का अ़ज़ाब बहुत ख़ौफ़नाक ना क़ाबिले बरदाश्त है, इस का अन्दाज़ा इस ह़दीसे पाक से लगाइये कि अगर जहन्नम को सूई के नाके जितना खोल दिया जाए तो दुन्या के तमाम लोग उस की गरमी और बदबू से मर जाएं । (معجم اوسط، 2/78، حدیث: 2583) नीज़ जहन्नमियों को जहन्नम में जो चीज़ पिलाई जाएगी अगर उस का एक क़त़रा भी दुन्या में टपका

दिया जाए तो दुन्या की सारी मईशत, खेतियां और बाग़ात वग़ैरा सब कुछ तबाह हो जाएं। (ترمذی، 4/263، حدیث:2594) ज़रा ग़ौर कीजिये ! जब जहन्नम के करोड़ों मील दूर होने के बा वुजूद सूई के नाके के बराबर खुलने से इतनी तबाही मच जाए और लोग हलाक हो जाएं तो जो बन्दा एक लम्हे के लिये भी जहन्नम में जाएगा उस का क्या ह़ाल होगा ? लिहाज़ा **अल्लाह** पाक के अ़ज़ाब को ख़्वाब में भी हलका नहीं समझना चाहिये।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त : 240, स. 2)

सुवाल : क्या जिन्नात भी जन्नत में जाएंगे ?

जवाब : आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की बारगाह में पूछा गया : **अ़र्ज़ :** क्या हुज़ूर जन्नत में जिन्नात न जाएंगे ? **इर्शाद :** एक क़ौल येह भी है कि जन्नत के आस पास मकानों में रहेंगे, जन्नत में सैर को आया करेंगे। (फिर फ़रमाया :) जन्नत तो जागीर है आदम عَلَيْهِ السَّلَام की, उन की औलाद में तक़्सीम होगी। (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 536) या'नी एक क़ौल के मुत़ाबिक़ जिन्नात जन्नत में नहीं बल्कि आस पास के मकानों में रहेंगे और जन्नत में घूमने के लिये आएंगे। इस के इ़लावा और भी अक़्वाल हैं। एक क़ौल येह भी है कि वोह जन्नत में दाख़िल नहीं होंगे बल्कि जन्नत के गिर्दो नवाह़ में रहेंगे, इन्सान उन को देखेंगे मगर वोह इन्सानों को नहीं देख पाएंगे। येह भी कहा जाता है कि वोह "आ'राफ़" में रहेंगे। ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ عَنْه से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मोमिन जिन्नों (या'नी मुसल्मान जिन्नात) के लिये सवाब भी है और उन पर इ़क़ाब (या'नी सज़ा) भी है। हम ने आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से उन के सवाब के बारे में पूछा

तो फ़रमाया : आ'राफ़ पर होंगे और वोह उम्मते मुहम्मदिय्यह के साथ जन्नत में नहीं होंगे । फिर हम ने पूछा : आ'राफ़ क्या है ? तो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह जन्नत की दीवार है जिस में नहरें जारी हैं और उस में दरख़्त और फल उगते हैं। एक क़ौल तवक्कुफ़ का है, या'नी इस बारे में ख़ामोशी इख़्तियार की जाए । (عمدۃ القاری، 15/252، 253۔ البعث والنشور، ص107، حدیث:108) (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/419)

सुवाल : अगर मरने वाले की बख़्शिश हो जाए तो क्या उस को उसी वक़्त जन्नत में दाख़िल कर दिया जाता है या क़ियामत के दिन दाख़िल किया जाएगा ?

जवाब : अगर मरने वाले की बख़्शिश हो जाए तो उस की क़ब्र में जन्नत की खिड़की खोल दी जाती है, जिस से वोह लुत्फ़ अन्दोज़ होता रहता है । बा क़ाइदा जन्नत में दाख़िला तो क़ियामत के दिन होगा ।

(मिरआतुल मनाजीह, 2/126 माख़ूज़न)

(मदनी मुज़ाकरे में शरीक मुफ़्ती साहिब ने फ़रमाया :) शुहदा की रूहें अ़र्श के नीचे क़िन्दीलों में परिन्दों के पोटों में होती हैं और उन्हें जन्नत में आने जाने की इजाज़त होती है। यूं ही **अल्लाह** पाक जिन जिन के लिये चाहे तो उन की अरवाह का जन्नत में आना जाना रहता है । (مسلم، ص، 807، حدیث: 4885) बाक़ी रहा जन्नत में दाख़िला तो वोह क़ियामत के दिन ही होगा । (मिरआतुल मनाजीह, 2/126, माख़ूज़न) और सब से पहले हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जन्नत में तशरीफ़ ले जाएंगे ।

(دلائل النبوۃ، الجزء: 1، ص33، حدیث:27) (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/286)

सुवाल : जन्नतियों को जन्नत में सब से पहले कौन सी ग़िज़ा दी जाएगी ?

जवाब : जन्नतियों को जन्नत में सब से पहले जो ग़िज़ा दी जाएगी वोह मछली की कलेजी का किनारा है । (بخاری، 2/412، حدیث:3329) आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सदक़े में اِنْ شَآءَاللّٰہ हम भी जन्नत में मछली की कलेजी का किनारा खाएंगे, अब कोई येह सोचे कि जन्नत में बहुत सारे लोग होंगे तो इतने सारे कलेजी के किनारे कहां से आएंगे तो इसे अपनी अ़क़्ल के घोड़े दौड़ा कर उलटी सीधी ह़रकतें करने के बजाए उस ज़ात के फ़रमान को मानना है जिस की शान ﴿اِنَّ اللّٰہَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ۝﴾ है, "या'नी बेशक **अल्लाह** सब कुछ कर सकता है।" مَعَاذَاللّٰہ वोह बेबस नहीं है बल्कि वोह जो चाहता है करता है । (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 6/365)

सुवाल : "अगर दुन्या में तमाम दियानत दार होते तो जन्नत दुन्या में ही होती" ऐसा कहना कैसा ?

जवाब : हो सकता है इस से येह मुराद हो कि हर त़रफ़ अम्न होता और लोग लूटमार न करते न किसी को तक्लीफ़ देते और सब के सब अम्नो अमान से रह रहे होते तो गोया ऐसा होना दुन्या में जन्नत होने जैसा है जैसे कश्मीर को वादिये जन्नत बोलते हैं । इस त़रह़ के जुम्ले बत़ौरे मुह़ावरा बोले जाते हैं । (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/319)

सुवाल : क्या जन्नत में मां बाप और बहन भाई साथ होंगे ?

(साइल : मुह़म्मद आ़मिर रज़ा)

जवाब : अगर ईमान पर ख़ातिमा हुवा और **अल्लाह** पाक राज़ी हुवा तो सब जन्नत में साथ रहेंगे कि जन्नत में कोई ग़म नहीं होगा ।

(ترمذی، 4/247، حدیث:258) जो जिस से मिलना चाहेगा उस से उस की मुलाक़ात हो जाएगी। (الترغیب والترہیب، 4/304، حدیث:115)

(इस मौक़अ़ पर मुफ़्ती साहिब ने फ़रमाया :) मां बाप के बारे में क़ुरआने पाक में मौजूद है : ﴿وَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّیَّتُهُمْ بِاِیْمَانٍ اَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّیَّتَهُمْ وَمَاۤ اَلَتْنٰهُمْ مِّنْ عَمَلِهِمْ مِّنْ شَیْءٍ﴾ (پ27، الطور:21) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** "और जो ईमान लाए और उन की औलाद ने ईमान के साथ उन की पैरवी की हम ने उन की औलाद उन से मिला दी और उन के अ़मल में उन्हें कुछ कमी न दी।" या'नी अगर कोई निचले दरजे में होगा तो वोह ऊपर दरजे वाले के साथ मिला दिया जाएगा।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त : 243, स. 2)

सुवाल : क्या ना बालिग़ी में फ़ौत होने वाले बच्चे अपने वालिदैन को जन्नत में ले कर जाएंगे ?

जवाब : जी हां ! ना बालिग़ी में फ़ौत होने वाले बच्चे अपने वालिदैन की सिफ़ारिश और जन्नत के दरवाज़े पर उन का इस्तिक़्बाल करेंगे ह़त्ता कि कच्चा बच्चा (या'नी साक़ित़ हो जाने वाला ह़म्ल) भी अपने वालिदैन की सिफ़ारिश के लिये **अल्लाह** पाक से तेज़ कलामी करेगा जैसे झगड़ा करते हैं ! फिर **अल्लाह** करीम उस को इजाज़त देगा और वोह अपने वालिदैन को खींच कर जन्नत में ले जाएगा। (ابن ماجہ، 2/273، حدیث:1608) अगर ह़क़ीक़त की निगाह से देखा जाए तो जिस ना बालिग़ औलाद की फ़ौतगी पर वालिदैन रो रो कर हलकान हो जाते हैं येह उन की आख़िरत का ज़ख़ीरा है। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त : 245, स. 8)

सुवाल : क्या जन्नत में औलाद होगी ?

जवाब : जी हां ! जन्नत में औलाद होगी । (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/286)

सुवाल : अगले शौहर की फ़ौतगी या त़लाक़ वग़ैरा की सूरत में जिस औ़रत ने एक से ज़ियादा शादियां की हों वोह जन्नत में कौन से शौहर के साथ रहेगी ?

जवाब : अगर कोई औ़रत यके बा'द दीगरे एक से ज़ियादा मर्दों के निकाह़ में आई तो एक क़ौल के मुत़ाबिक़ जिस के निकाह़ में सब से आख़िर में थी जन्नत में उसी के साथ होगी । जैसा कि ह़ज़रते अबुद्दरदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रूह़ परवर है : "औ़रत जन्नत में अपने उस शौहर के निकाह़ में दी जाएगी जो दुन्या में उस का सब से आख़िरी शौहर था ।"

(مسند الشامیین للطبرانی، 2/359، حدیث:1496)

दूसरा क़ौल येह है जिस का अख़्लाक़ ज़ियादा अच्छा होगा उसे मिलेगी जैसा कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! बा'ज़ औ़रतें दुन्या में दो, तीन या चार शौहरों से (यके बा'द दीगरे) शादी करती हैं, फिर मरने के बा'द वोह जन्नत में इकठ्ठे हों तो वोह औ़रत किस शौहर के लिये होगी ? इर्शाद फ़रमाया : उसे इख़्तियार दिया जाएगा और जिस ख़ावन्द का अख़्लाक़ दुन्या में सब से अच्छा होगा वोह उस को इख़्तियार करेगी, वोह कहेगी : ऐ मेरे रब ! मेरे इस ख़ावन्द का अख़्लाक़ सब से अच्छा था लिहाज़ा इस के साथ मेरा निकाह़ फ़रमा दे । (معجم کبیر، 23/367، حدیث:870)

इन दोनों अहादीस व अक़्वाल में कोई तआ़रुज़ (या'नी टकराव) नहीं। जैसा कि ह़ज़रते इमाम अह़मद बिन ह़जर मक्की शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जिस औ़रत ने यके बा'द दीगरे कई निकाह़ किये हों तो एक सूरत येह है कि हर शौहर ने उस को त़लाक़ दे दी हो और जब वोह फ़ौत हुई तो किसी के निकाह़ में न थी तो सिर्फ़ इसी ह़ालत में उस को इख़्तियार दिया जाएगा और जिस ख़ावन्द का अख़्लाक़ दुन्या में सब से अच्छा होगा उसे मिलेगी। जैसा कि ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا की ह़दीस में मज़्कूर है। और दूसरी सूरत येह है कि उस ने मुतअ़द्दद निकाह़ किये हों और आख़िरी ख़ावन्द ने उस को त़लाक़ न दी हो और वोह उस के निकाह़ में फ़ौत हुई इस सूरत में वोह जन्नत में आख़िरी ख़ावन्द के निकाह़ में होगी जैसा कि ह़ज़रते अबुद्दरदा رَضِیَ اللهُ عَنْه की ह़दीस में है।

(فتاوٰی حدیثیہ، ص70-71) (नेकी की दा'वत, स. 297)

अख़्लाक़ हों अच्छे मेरा किरदार हो सुथरा मह़बूब का सदक़ा तू मुझे नेक बना दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 103)

सुवाल : जो मुसल्मान मर्द व औ़रत कुंवार पन में रुख़्सत हुए हों क्या उन के निकाह़ की भी कोई सूरत होगी ?

जवाब : जिन मर्दों या औ़रतों का सारी ज़िन्दगी निकाह़ नहीं होता उन का भी जन्नत में एक दूसरे से निकाह़ कर दिया जाएगा।

(नेकी की दा'वत, स. 296)

सुवाल : दुन्या की जन्नती औ़रतें अफ़्ज़ल हैं या ह़ूरें ?

जवाब : दुन्या की जन्नती औ़रतें हूरों से अफ़्ज़ल हैं। चुनान्चे "त़बरानी" की एक त़वील ह़दीसे पाक में येह भी है : उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! दुन्या की औ़रतें अफ़्ज़ल हैं या बड़ी आंखों वाली जन्नती हूरें ?" तो आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "दुन्या की औ़रतें बड़ी आंखों वाली जन्नती हूरों से अफ़्ज़ल हैं।" उम्मुल मुअमिनीन ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! किस वज्ह से ? तो आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "येह उन के नमाज़ और रोज़े और **अल्लाह** पाक की इ़बादत करने की वज्ह से है।" (معجم کبیر، 23/367، حدیث:870) एक और ह़दीसे पाक में है : दुन्या की जन्नती औ़रतें हूरों से 70 हज़ार दरजे अफ़्ज़ल हैं। (التذکرہ للقرطبی، ص 458) जलीलुल क़द्र ताबेई ह़ज़रते ह़िबान बिन अबू जबला رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : दुन्या की वोह औ़रतें जो जन्नत में जाएंगी अपने नेक कामों की वज्ह से जन्नत की हूरों से अफ़्ज़ल होंगी।

(تفسیر قرطبی، پ27، الرحمٰن، تحت الآیۃ:70، 9/137) (Nekī kī da'wat, s. 297)

सुवाल : हम ने सुना है कि ज़ुलैख़ा बूढ़ी हो कर जन्नत में जाएगी। क्या येह सह़ीह़ बात है ?

जवाब : ज़ुलैख़ा पहले मुसल्मान नहीं थी, लेकिन बा'द में बुढ़ापे में पहुंच कर मुसल्मान हो गई थी। ज़ुलैख़ा को ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیۡہِ السَّلَام से इ़श्क़ था, लेकिन आप عَلَیۡہِ السَّلَام को ज़ुलैख़ा से इ़श्क़ नहीं था। जो लोग نَعُوۡذُ بِاللّٰہ ! आप عَلَیۡہِ السَّلَام को इ़श्क़े मजाज़ी में मुब्तला बताते हैं वोह नबी

की तौहीन करते हैं और नबी की तौहीन करना कुफ़्र है। (बहारे शरीअ़त, 1/47, हिस्सा : 1) नबी ऐसा काम नहीं करते। इ़श्क़ सिर्फ़ ज़ुलैख़ा की त़रफ़ से था और One Sided (या'नी एक त़रफ़ा) था। ज़ुलैख़ा बूढ़ी हो गई थी और उस का हुस्नो जमाल भी चला गया था, लेकिन बा'द में वोह मुसल्मान हुई, उस का आप عَلَيْهِ السَّلَام से निकाह़ हुवा और उस का हुस्नो जमाल भी लौट आया। दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की किताब "पर्दे के बारे में सुवाल जवाब" के अन्दर इस की तफ़्सीली ह़िकायत मौजूद है। रहा येह सुवाल कि जन्नत में ज़ुलैख़ा बूढ़ी हो कर जाएगी तो येह बात सह़ीह़ नहीं है, क्यूं कि जन्नत में सब जवान होंगे, यहां तक कि एक दिन का बच्चा भी अगर जन्नत में जाएगा वोह भी जवान होगा और 100 साल का बूढ़ा जन्नत में जाएगा वोह भी जवान होगा। सब जन्नती 30 साल के मा'लूम होंगे।

(मिरआतुल मनाजीह़, 8/385) (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त़ : 247, स. 27)

सुवाल : ह़सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا जन्नती जवानों के सरदार हैं या नौ जवानों के सरदार हैं ?

जवाब : जवान के मा'ना बहादुर के हैं या'नी जो लड़ाई के मुआ़मले में त़ाक़त वर है और जिहाद में मज़बूत़ी से लड़ता है उस को जवान कहा जाता है। (सवानेह़े करबला, स. 104 माख़ूज़न) इसी वज्ह से बा'ज़ 60 या 70 साल के बूढ़ों को भी किताबों में जवान लिखा होता है। वरना ह़क़ीक़तन इन्सान 30 बरस तक जवान रहता है, इस के बा'द जवानी ढलना शुरूअ़

हो जाती है। ह़सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا जन्नती नौ जवानों के सरदार हैं ह़ालां कि जन्नत में सारे ही जवान होंगे, लेकिन जन्नती नौ जवानों के सरदार होने का मत़लब येह है कि ह़सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا उन के सरदार हैं जो दुन्या में नौ जवानी की ह़ालत में इन्तिक़ाल कर गए।[1] वरना उर्दू में जवान का लफ़्ज़ नौ जवान और जवान दोनों के लिये इस्ति'माल किया जाता है, इस में फ़र्क़ नहीं होता। इसी वज्ह से जवानी लफ़्ज़ बोला जाता है नौ जवानी नहीं कहा जाता जैसे बोलते हैं भरी जवानी में चला गया। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 6/99)

सुवाल : ह़ज़रते इमामे ह़सन और ह़ज़रते इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا जन्नत में नौ जवानों के सरदार होंगे तो बूढ़ों के सरदार कौन होंगे ?

(अर्सलान)

जवाब : सब से पहले तो येह याद रखें कि जन्नत में सब के सब जन्नती 30 बरस के होंगे। (ترمذی، 4/244، حدیث:2554) अलबत्ता दुन्या में जो बूढ़े हो कर फ़ौत हुए होंगे जन्नत में उन के सरदार ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर और ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا होंगे।

(ترمذی، 5/376، حدیث:3685) (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 6/186)

1... ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : जो लोग जवानी में वफ़ात पाएं और हों जन्नती, ह़ज़राते ह़सनैने करीमैन उन के सरदार हैं, वरना जन्नत में तो सभी जवान होंगे लिहाज़ा इस से येह लाज़िम नहीं कि ह़ज़राते ह़सनैने करीमैन ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم या दूसरे नबियों के भी सरदार हों। शबाब जम्अ़ है शाब की ब मा'ना जवान, जवानी की उ़म्र अठ्ठारह बरस से तीस साल तक है।

(मिरआतुल मनाजीह़, 8/475)

सुवाल : क्या औ़रत येह दुआ़ कर सकती है कि उसे जन्नत में प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब हो जाए ?

जवाब : बेशक औ़रत जन्नत में प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस मांग सकती है बल्कि मांगना चाहिये । अगर जन्नत में किसी भी ख़ुश नसीब को प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब हो गया तो उस के वारे नियारे हो जाएंगे । काश ! हमें जन्नत में प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब हो जाए । (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 6/95)

सुवाल : आप ने इर्शाद फ़रमाया कि जन्नत में प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस मिलने की दुआ़ मांगनी चाहिये मगर प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अरबों उम्मती हैं जिन में सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم के साथ साथ कई बड़ी बड़ी हस्तियां होंगी ऐसी सूरत में इतने सारे उम्मतियों को किस त़रह़ प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब होगा ?

जवाब : याद रखिये ! जन्नत में किसी को रन्जो ग़म नहीं होगा और रही बात जन्नत में इतने सारे उम्मतियों को प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस मिलने की तो इस की कई मिसालें दुन्या में ही मौजूद हैं मसलन ह़ज़रते सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को किसी ने अपने घर आ कर इफ़्त़ार करने की दा'वत दी, आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने क़बूल फ़रमा ली, फिर किसी और ने आ कर इफ़्त़ार की दा'वत दी आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने उसे भी क़बूल फ़रमा लिया । यहां तक कि 70 मुरीदों ने आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को अपने घर में इफ़्त़ार करने की दा'वत दी और आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने सब की दा'वत

को क़बूल फ़रमा लिया। रावी का बयान है कि हर मेज़बान कह रहा था कि उस दिन ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने मेरे घर इफ़्तार फ़रमाया है, हैरत बालाए हैरत येह कि आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه उस दिन अपने आस्ताने से कहीं गए भी नहीं बल्कि वहीं पर इफ़्तार फ़रमाया। (تفریح الخاطر، ص112)

गए इक वक़्त में सत्तर मुरीदों के यहां आक़ा समझ में आ नहीं सकता मुअ़म्मा ग़ौसे आ'ज़म का

(क़बालए बख़्शिश, स. 94)

देखा आप ने! ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه किस त़रह़ एक वक़्त में 70 जगह तशरीफ़ ले गए तो अन्दाज़ा कीजिये जब एक उम्मती की येह शान है तो प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़ज़मतो शान का क्या आ़लम होगा। क्या आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जन्नत में अपने करोड़ों उम्मतियों को पड़ोस नहीं अ़त़ा फ़रमा सकते!

(अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के क़रीब बैठे मुफ़्ती साह़िब ने फ़रमाया:) ह़ज़रते अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ दब्बाग़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं: जन्नतुल फ़िरदौस जन्नत में बहुत बड़ा दरजा है मगर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जन्नतुल फ़िरदौस से भी आ'ला मक़ाम पर तशरीफ़ फ़रमा होंगे और शफ़्क़त फ़रमाते हुए अपने उम्मतियों के पास तशरीफ़ लाया करेंगे। (الابریز، 2/324 ماخوذا) (इस पर अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने फ़रमाया:) येह कहना कि "सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आ'ला मक़ाम पर तशरीफ़ फ़रमा होंगे" के मुक़ाबले में येह कहना ज़ियादा ख़ूब सूरत है कि "सरकार

صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जहां तशरीफ़ फ़रमा होंगे वोह मक़ाम आ'ला हो जाएगा।"

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 6/96)

सुवाल : क्या जन्नत में जिस्म पर बाल नहीं होंगे ?

जवाब : जन्नत में सिर्फ़ सर, पलकों और भवों के बाल होंगे, इस के इलावा जन्नतियों के जिस्म पर कहीं भी बाल नहीं होंगे।

(बहारे शरीअ़त, 1/159, हिस्सा : 1) (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/291)

सुवाल : जन्नती आपस में किस त़रह़ मिलेंगे ?

जवाब : जन्नती बेशक एक दूसरे से मिलेंगे। उन के पास सुवारियां होंगी, जब किसी से मिलना चाहेंगे तो वोह सुवारी उड़ा कर ले जाएगी। (کتاب العظمۃ، ص218، 219، حدیث:612 ماخوذا) **अल्लाह** पाक की रह़मत से न सुवारी में ख़ौफ़ होगा कि गिर पड़ेगी, चोट आएगी, न हिल कर डराएगी क्यूं कि जन्नत में न कोई ख़ौफ़ है न डर, न कोई तक्लीफ़ है न बीमारी, न खांसी है न नज़्ला और न ही कोई ऐसी ठन्ड। वहां तो रह़मत ही रह़मत है आसानी ही आसानी और सहूलत ही सहूलत है। जन्नत में वोह वोह चीज़ें और ने'मतें हैं जो हम सोच भी नहीं सकते। काश ! इस प्यारी प्यारी जन्नत को पाने के लिये हम सब नेकियां करने वाले, गुनाहों से बचने वाले और नमाज़ों के पक्के पाबन्द हो जाएं। कड़कड़ाती सर्दी में भी लाख शैत़ान सुस्ती दिलाए लेकिन हम शैत़ान को धक्का मार कर नमाज़ें पढ़ने वाले बन जाएं।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/451)

सुवाल : क्या येह बात दुरुस्त है कि हर अनार में एक जन्नती दाना होता है ?[1]

जवाब : अनार के बारे में येह बात मशहूर है कि हर अनार में एक दाना जन्नती होता है चुनान्चे ह़ज़रते हुमैद बिन जा'फ़र رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه अपने वालिद से नक़्ल करते हैं कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا अनार का एक एक दाना तनावुल फ़रमाते या'नी खा लेते थे, किसी ने इस की वज्ह दरयाफ़्त की तो फ़रमाया : मुझे ख़बर मिली है कि ज़मीन में कोई भी अनार का दरख़्त ऐसा नहीं है कि जिसे बारदार (या'नी फल के क़ाबिल) करने के लिये उस में जन्नती अनार से दाना न डाला जाता हो तो हो सकता है येह वोही दाना हो । (अल्लाह वालों की बातें,1/566 ता 567۔حلیۃ الاولیاء،1/398،حدیث:1139) या'नी अनार के पूरे दरख़्त को फलदार बनाने के लिये उस में एक दाना जन्नती अनार का डाला जाता है इस लिये ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا अनार का एक एक दाना खा लेते थे कि शायद वोही जन्नती दाना इस अनार में हो और मुझे नसीब हो जाए । (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/348)

सुवाल : क्या जन्नतियों को पसीना आएगा ? (साइला : अस्मा अ़त्तारिय्या)

जवाब : سُبْحٰنَ الله ! जन्नत में जन्नतियों को जो पसीना आएगा वोह ऐसा ख़ुश्बूदार होगा कि उस में मुश्क की सी ख़ुश्बू होगी ।

(مسلم،ص1165،حدیث:2835) (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त़ : 197, स. 7)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

1... येह सुवाल शो'बा हफ़्तावार रिसाले की त़रफ़ से क़ाइम किया गया है जब कि जवाब अमीरे अहले सुन्नत का अ़त़ा फ़रमूदा ही है ।

सुवाल : क्या मियां बीवी दोनों जन्नत में एक साथ रहेंगे ?

जवाब : जी हां ! अगर मियां बीवी का ख़ातिमा ईमान पर हुवा तो येह दोनों जन्नत में साथ रहेंगे । (التذکرۃ باحوال الموتی وامور الاخرۃ، ص462) अगर इन में से किसी का مَعَاذَاللّٰه ईमान सलामत न रहा तो दोज़ख़ उस का ठिकाना होगा और जो जन्नत में जाएगा उस का किसी दूसरे जन्नती से निकाह़ हो जाएगा । जन्नत में जाने वाले को अपने दूसरे फ़रीक़ के बिछड़ने का कोई ग़म व सदमा भी नहीं होगा क्यूं कि जन्नत ग़म और सदमे का मक़ाम नहीं ।

(फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा, क़िस्त : 8, स. 30)

सुवाल : जन्नत में मर्दों को ह़ूरें मिलेंगी तो औ़रतों को क्या मिलेगा ?

जवाब : औ़रतों को जन्नत में उन के वोह शौहर मिलेंगे जिन के निकाह़ में वोह थीं बशर्ते कि शौहर भी जन्नती हों । अगर किसी औ़रत का शौहर जन्नत में न जा सका तो वोह किसी और जन्नती मर्द के निकाह़ में दे दी जाएगी । इसी त़रह़ "जो औ़रतें कुंवारी फ़ौत हुईं वोह भी जन्नत में किसी मर्द की ज़ौजिय्यत में चली जाएंगी । इस के इ़लावा जन्नत की ने'मतें मसलन मह़ल्लात, लिबास, ग़िज़ाएं और ख़ुश्बूयात वग़ैरा मर्द व औ़रत में मुश्तरक हैं, अलबत्ता दीदारे इलाही में इख़्तिलाफ़ है और सह़ीह़ येह है कि दोनों को होगा । (फ़तावा अहले सुन्नत, सिल्सिला नम्बर : 7, स. 24)

(फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा, क़िस्त : 31, स. 3)

नोट : आख़िरी दो सुवालात फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा से लिये गए हैं जिन में ह़स्बे ज़रूरत तरमीम व इज़ाफ़ा शामिल है ।